तुलसी माता की कहानी

©Heygreetings.in

©Heygreetings.in

कार्तिक महीने में एक
बुढिया माई तुलसीजी
को सींचती और कहती कि
हे तुलसी माता !

सत की दाता मैं तेरा बिडला
सीचती हूँ , मुझे बहु दे ,
पीताम्बर की धोती दे ,
मीठा मीठा गास,

देबैकुंठा में वास दे ,
चटक की चाल दे ,
पटक की मोत दे ,

Read Online

©Heygreetings.in

चंदन का काठ दे ,
रानी सा राज दे ,
दाल भात का भोजन
दे ग्यारस की मोंत दे ,
कृष्ण जी का कन्धा दे |

तब तुलसी माता यह सुनकर
सूखने लगी तो
भगवान ने पूछा – की हे तुलसी !
तुम क्यों सुख़ रही हो ?
तुलसी माता ने कहा
कि एक बुढिया रोज आती है
और यही बात कह जाती है |

Read Online

©Heygreetings.in

में सब बात तो पूरा
कर दूँगी लेकिन
कृषण का कन्धा
कहा से लाऊंगी |

तो भगवान बोले जब
वो मरेगी तो में अपने
आप कंधा दे आऊगा |
तू बुढिया माई से कह देना |

बाद में बुढिया माई
मर गई | सब लोग आ गये |
जब माई को ले जाने लगे
तो वह किसी से न उठी |

Read Online

©Heygreetings.in

तब भगवान एक बारह
बरस के बालक का
रूप धारण करके आये |

बालक ने कहा में कान
में एक बात कहूँगा
तो बुढिया माई उठ जाएगी |

बालक ने कान में कहा ,
बुढिया माई मन की
निकाल ले , पीताम्बर
की धोती ले , मीठा
मीठा गास ले ,

Read Online

©Heygreetings.in

बेकुंठा का वास ले ,
चटक की चल ले ,
पटक की मोत ले ,
कृषण जी का कन्धा ले
यह सुनकर बुढिया
माई हल्की हो गई |

भगवान ने कन्धा दिया
और बुढिया माई को
मुक्ति मिल गई |
हे तुलसी माता जेसे
बुढिया माई को मुक्ति
दी वेसे सबको देना |

Read Online